International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(6): 23-25

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(6): 23-25
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 15-07-2015
Accepted: 17-08-2015

कल्पना देशमुख
शोधार्थी (संस्कृत)
डेक्कन कॉलेजए पुणे

Correspondence
कल्पना देशमुख
शोधार्थी (संस्कृत)
डेक्कन कॉलेजए पुणे

आदित्योंकी गणना

कल्पना देशमुख

शोधसार

वेदोंमे आदित्योंकी गणनाके बारेमे भिन्नभिन्न विचारधारा होते हुये भी द्वादश आदित्य कैसे बने इसका विवरणात्मक अभ्यास करना इस शोधपत्र का उद्देश्य है ।

प्रस्तावना

वेदोमें आदित्य अदितीके पुत्र के नामसे जाने जाते हैं । अथर्ववेदके 7.7 सूक्तमे आये हुये संदर्भके अनुसार अदितीके पुत्रोंको आदित्य और दीति के पुत्रोंको असुर कहा गया है । इस आधारपर सभी देवता आदित्य हैं । अपितु समुहरूपसे बारा आदित्योंकी गणना वेदोंमे मिलती है । ऋग्वेदमें सूर्यको आदितेय इस विशेषणसे संबोधित किया गया है । इसिलिए बारा आदित्य कौन और कैसे बने इसका विस्तृत विचार इस शोधपत्रमे किया है ।

आदित्य शब्दकी व्युत्पत्ती

वेदोमें आदित्य अदितीके पुत्र हैं । सभी आदित्योंको एकसाथ संबोधित करते समय 'आदित्यारू या आदित्यासरू' ऐसे बहुवचनका प्रयोग किया गया है । सायणाचार्यने ऋ 1.18.5 इस ऋचाके अपने भाष्यमे ष्आदित्य अदितेरू पुत्रारूष् यानी आदित्य अदितीके पुत्र हैं । और ऋ. 7.51.1 इस ऋचामे ष्आदित्यासरू आदित्या देवारू भुवनस्य सर्वस्य जगतरू गोपारू ।' यानी ष्आदित्यदेव सब जगतके रक्षण करणेवाले हैं' ऐसा अर्थ किया है । पाणिनीसूत्रके 4.1.85 इस सूत्रसे 'दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदाण्ण्यरू' अदितीके पुत्र इस अर्थसे आदित्य शब्द व्युत्पन्न होता है ।

आदित्योंकी उत्पत्ती

ऋग्वेदमें आदित्यसूक्तके 7.66.13 इस ऋचामे आदित्योंको ष्ऋतजाता' यानी सत्यसे उत्पन्न बताया है । तै. सं. 7.1.5 इस मंत्रमे आदित्योंको प्रजापतीने निर्माण किया है ऐसा कहा है । 'प्रजापतिने वसु, रुद्र और आदित्य देवोंको निर्माण किया'[1] ऐसा इस मंत्रका आशय है । श. ब्रा. ग्रंथके 6.1.2.8 इस मंत्रमे प्रजापतीसे बारा आदित्योंकी निर्मिती हुई है ऐसा कहा है ।[2] इस परिच्छेदका आशय इस तरहसे है । 'प्रजापतीके मन और वाणीका संयोग होकर बारा बुंदोसे उन्होने गर्भ धारण किया । उन बारा बुंदोसे आदित्योंका जन्म हुआ । उन आदित्योंको प्रजापतीने दिव्य आकाशमे स्थापित किया है ।'

वेदोंमे आदित्योंकी गणना

ऋषी कूर्म गार्त्समद विरचित ऋ. 2.27 इस आदित्यसूक्तकी पहिली ऋचामे अदितीपुत्र आदित्योंके मित्र, अर्यमन्, भग, वरुण, दक्ष और अंश ऐसे छह नाम आये हैं । इनका विशेषण है राजभ्यरू यानी आदित्य तेजस्वी राजाएँ हैं । 'घृतसे आच्छादित स्तोत्र पढते हुए मै वाणीके सहाय्यतासे आदित्योंको आहुती दे रहा हूँ । मित्र, अर्यमन्, भग, अंश, दक्ष और वरुण ये आदित्य हमारी स्तुती सुने'[3] ऐसा 2.27.1 इस ऋचाका आशय है । यहाँ पर एक प्रकारके वाग्यज्ञ

[1] प्रजापतिः स देवानसृजत वसून् रुद्रानादित्यास्यान्ते देवाः । तै. सं.7.1.5

[2] स मनसा एव वाचं मिथुनं समभवत् सा द्वादश द्रप्सान् गर्भ्यभवयत् ते द्वादशादित्याः असृज्यन्त् तान् दिव्युपादधात् ॥ श. ब्रा. 6.1.2.8

[3] इमा गिरं आदित्येभ्यो घृतस्नूः सनाद्राजभ्यो जुह्वा जुहोमि । शृणोतु मित्रो अर्यमा भगो नस्तुविजातो वरुणो दक्षो अंशः॥ ऋ. 2.27.1

की अपेक्षा की गई है। इस ऋचाके अनुवादमे ग्रिफिथने छह आदित्योंके नाम दीए है। सायणाचार्यने अपने भाष्यमे आदित्योंके व्युत्पत्तीके साथ नामोंका स्पष्टीकरण दिया है। यहाँ सायणाचार्य पाच आदित्योंका उल्लेख करते है। [4]

'मित्र ये नाम प्र उपसर्गपूर्वक मा धातुसे बना है जिसका अर्थ तारक है। या सबके लिए प्रेमरूप धारण करणेवाला मित्र है। अर्यमा शत्रूंओंका नाश करणेवाला, भग स्तुती या भक्ती करनेलायक देवता है। तुविजात ये वरुणके लिए आया विशेषण है। तुवि यानी अनेक स्थानोंपर उत्पन्न हुआ वो तुविजात है। वरुण पापका निवारण करणेवाला है। दक्ष यानी जो समर्थ है। ये अंशके लिए आया हुआ विशेषण है ऐसा सायण कहते है।' दक्ष ये नाम आदित्योंमे सम्मिलीत है ऐसा बाकी विद्वानोंका कहना हैं। सूर्यकी सात किरणें और सात आदित्य इनमें कुछ समन्वय दिखाई देता है। ऋषी शंयु बार्हस्पत्य अपने इन्द्रसूक्तमे ऋ. 6.44.24 इस ऋचामे सूर्यके सात किरणोंवाले रथ का उल्लेख करते है। 'दशयंत्रसे युक्त ऐसा शरीररूपी कूप कार्यरत रखनेवाला बुद्धिमान सोम, द्युलोक और पृथ्वीके लिए नक्षत्रोंको स्थिर करके, सातकिरणोंवाला सूर्यरथ सिद्ध किया और धेनूमे पक्का दुग्ध निर्माण किया' ऐसा इस ऋचाका आशय है।[5] ग्रिफिथ कहते हैं the chariot with the sevenfold reins. सायणाचार्यने 6.44.24 इस ऋचामे आए सात इस शब्दपर अनेक पर्यायोंका विचार किया है।[6] 'सात किरणोंके आधारसे चलनेवाला सूर्यरथ या सात अश्व जोता हुआ रथ या सात चक्र के आधारसे चलनेवाला रथ'। इस ऋचामे सूर्यकी अनंत किरणे होते हुए भी केवल सात किरणोंका उल्लेख अधिक महत्त्वपूर्ण महसूस होता है। क्योंकी ऋषी कश्यप मारीच विरचित पवमान सोमसूक्तके ऋ. 9.114.3 इस ऋचामेभी आदित्योंकी संख्या सात है ऐसा बताया है। [7] ऋ. 10.72.8 इस ऋचामे सात आदित्य और आठवाँ मार्ताण्ड यानी सूर्य है ऐसा संदर्भ आता है। ऋग्वेदमें सप्तादित्य और आठवाँ सूर्य है, इसतरह से आदित्योंकी संख्या आठ मिलती है।

अथ. 11.8.2 इस मंत्रके भाष्यमें सायणाचार्यने निम्मलिखित बारा आदित्योंका उल्लेख किया हैं। [8] "आचार्योंके गणना अनुसार ये बारा आदित्य है। यहाँ वरुण इत्यादि सूर्यमूर्तीओकी स्तुती की है। "धाता, अर्यमा, मित्र, वरुण, अंश, भग, विवस्वत्, इन्द्र, पूषा, पर्ज्यन्य, त्वष्टा और विष्णु ये किरणरूपी बारा आदित्य हैं" ऐसा इस मंत्रमे कहा गया है। इस मंत्रमे आचार्यने बारा आदित्योंको वरुणादि सूर्यमूर्ती कहा है। बारा वरुणादि सूर्यमूर्तीयोंका आगे चलकर बारा आदित्योंमे रूपांतर हुआ होगा ऐसा प्रतीत होता है।

वा. सं. 34.55 इस मंत्रमे सात इस संख्यापर विद्वानोंने विशेष रूपसे स्पष्टीकरण दिया है। [9] 'सात ऋषी अपने शरीरमे स्थापित हैं। ये अविरत शरीर की देखभाल करते हैं। परन्तु दो देवता मात्र कभीभी नही सोते' ऐसा इस मंत्रमे कहा है।

भाष्यकार महिधरके विचारसे वा. सं. 34.55 इस मंत्रमे सप्तऋषी यानी सात प्राण हैं। त्वचा, नेत्र, कर्ण, जीभ, नाक, मन और बुद्धि ये शरीरमे कार्यरत रहते हैं। ये सातों हमेशा सावध रहकर अपने शरीरका रक्षण करते हैं। [10] इस ऋचाका स्पष्टीकरण निरु. 12.36 में किया गया है। लक्ष्मण सरुपने दिया इस परिच्छेदका अनुवाद इस तरहसे है - 'Seven seers are placed in the body, i.e. Rays in the Sun. Seven protect the seat, i.e. the year without neglect i.e. without being negligent. Seven pervading ones; they alone go to the world of the sleeping one, i.e. the setting Sun. Their wake two gods who never sleep and sit at sacrifice i.e. the air and the Sun. This is reference to the self. Seven seers are placed in the body. i.e. six senses and seventh knowledge in the soul.' यानी की "अपने शरीरमें सात ऋषी होते हैं वो सूर्यके सात किरणें हैं। ये सातों अपने शरीरका संरक्षण करते हैं। सूर्यास्त होते ही संपूर्ण सृष्टी निद्राके अधीन होती हैं। परन्तु दो देवता कभीभी निद्रा नही लेते। ये दोनो अपने स्थानपर रहकर यज्ञ करते हैं। ये दोनो यानी एक वायू और दुसरा सूर्य है। इस तरहसे सात ऋषी शरीरमे कार्यरत है।" लक्ष्मण सरुप के विचारसे ये छे ज्ञानेंद्रिये और सातवा आत्मज्ञान है।

ऐ. ब्रा. 1.10 और श. ब्रा. 6.1.2.8 इस परिच्छेदमे समुहरूपमें आये आदित्य बारा है। [11] श. ब्रा. 16.6.3.8 इस परिच्छेदमें 'आदित्य कितने है? संवत्सरमें बारा महिने इसतरहसे बारा आदित्य हैं ऐसा कहा गया है।' तै. आ. 1.7 इस मंत्रमे विविध गुणधर्मोंके कारण सूर्य को अनेक सूर्य बतलाते हुये सूर्यके सात नाम भी दिये हैं। [12]

तै.आ.1.7.2 इस परिच्छेदमें 'आरोग, भ्राज, पटर, पतङ्ग, स्वर्ण, ज्योतिषमान्, बिभास' ये सात आकाशमे आते हैं। इन सबको आठवें महामेरू कश्यपसे तेज मिलता हैं। और आगे चलकर तै. आ. 1.13.3 इस परिच्छेदमें आदित्योंकी गणना आठ की गई हैं, जो इस तरहसे हैं - [13]

'मित्र, वरुण, धाता, अर्यमा, अंश, भग, इन्द्र और विवस्वान्।'

शब्दकोशोमें आदित्योंकी गणना बारा की गई हैं परंतु नाम अलग अलग तरहसे मिलते हैं। 'वाचस्पत्यम्' इस प्राचीन शब्दकोशमें पृ. 940 पर बारा आदित्य इस तरहसे आते हैं। [14] 'धाता, अर्यमा, मित्र, वरुण, अंश, भग, इन्द्र, विवस्वान, पूषा, पर्ज्यन्य, त्वष्टा और विष्णु ये बारा आदित्य कश्यपसे उत्पन्न हुए हैं।' 'अमरकोशमें' बारा आदित्य कश्यप और दक्षकन्यासे उत्पन्न हुये शुक्र, विष्णु, अर्यमा, धाता, त्वष्टा, पूषा, विवस्वान्, सविता, मित्र, वरुण, अंश और भग ये बारा आदित्य है। [15] 'आपटे शब्दकोशमें' दिए बारा आदित्य इस प्रकारसे हैं।[16]

---

[4] सायण - मित्र: प्रमीतेस्त्रायक:। यद्वा सर्वेषां स्निग्ध:। अरीन् यच्छति नियच्छतीति, अर्यमा। भग: भजनीयो देव:, तुवीति बहुनाम। बहुषु देशेषु अनुग्रहार्थं प्रादुर्भूत:। वरुणविशेषणमेतत्। पापस्य निवारणात् वरुण:। दक्ष: समर्थ:। एतच्च अंशस्य विशेषणम्। ऋ.2.27.1

[5] अयं द्यावापृथिवी वि ष्कभायदयं रथमयुनक्सप्तरश्मिम्। अयं गोषु शच्या पक्वमन्त: सोमो दाधार दशयन्त्रमुत्सम्॥ ऋ.6.44.24

[6] सप्तरश्मि सप्तरश्मिभि: किरणैरूपेत्यं सप्ताश्वं सप्तचक्रं वा। ऋ.6.44.24

[7] सप्तदिशो नानासूर्या: सप्त होतार ऋत्विज:। देवा आदित्या ये सप्त तेभि: सोमाभि: रक्ष न इन्द्रायेन्दो परि स्रव॥ ऋ. 9.114.3

[8] ब्रूमो राजानं वरुणं मित्रं विष्णुमथो भगम्। अंशं विवस्वन्तं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहस:॥ अथ. 11.8.2

आचार्येस्तु द्वादशादित्या: परिगणिता: - अत्र वरुणादय: सूर्यमूर्तय: स्तूयते

धात्रर्यममित्राख्या वरुणांशभगा विवस्वदिन्द्रयुता:। पूषाह्वयपर्ज्यन्यौ त्वष्टा विष्णुश्च भानव: प्रोक्ता: इति॥ अथ. 11.8.2

[9] सप्त ऋषय: प्रतिहिता: शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम्। सप्तापु: स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतो अस्वप्नजौ सत्रसदौ च देवौ॥ वा. स. 34.55

[10] महिधरभाष्य - सप्त ऋषय: प्राणा: त्वक् चक्षु:श्रवणरसनाघ्राणमनोबुद्धिलक्षणा: शरीरे प्रतिहिता: व्यवस्थिता: ते एव सप्त सदं सदाकालमप्रमादं सावधानं यथा तथा शरीरं रक्षन्ति। वा. स. 34.55

[11] अष्टौ वसव: एकादश रुद्रा: द्वादशादित्या: प्रजापतिश्च वषट्कारश्च इति। ऐ.ब्रा. 1.10; ते द्वादशादित्या असृजन्त। श.ब्रा. 6.1.2.8 कतमे आदित्या इति। द्वादशमासाः संवत्सरस्यैत् आदित्याः। श. ब्रा. 16.6.3.8

[12] नानालिङ्गत्वाहेतूनां नानासूर्यत्वम्। तै. आ.1.7;

आरोगो भ्राज: पटर: पतङ्ग: । स्वर्णरो ज्योतिषमान् बिभास:। ते अस्मै सर्वे दिवे आतपन्ति। ते सर्वे कश्यपाज्ज्योतिर्लभन्ते। तै.आ.1.7.2

[13] मित्रश्च वरुणश्च धाता चार्यमा च अंशुश्च भगश्च इन्द्रश्च विवस्वांश्चेते। तै.आ. 1.13.3

[14] द्वादशादित्यामध्ये आदित्य भेदे। ते च आदित्या: काश्यपेनोत्पादिता:। धाताऽर्यमा च मित्रश्च वरुणोंऽशुर्भगस्तया। इन्द्रो विवस्वान् पूषा च पर्ज्यन्यो दशम: स्मृत:। ततस्त्वष्टा ततो विष्णुरजघन्यो जघन्यज:॥ वाचस्पत्यम् पृ. 940

[15] मरीचात् कश्यपाज्ञातास्तेऽदित्या दक्षकन्यया। तत्र शूक्रश्च विष्णुश्च अज्ञाते पुनरेवह॥ अर्यमा चैव धाता च त्वष्टा पूषा च भारत। विवस्वान् सविता चैव मित्रो वरुण एव च। अंशो भगञ्चाति तेषा आदित्या द्वादश स्मृता॥ अ. को.

धाता, मित्र, अर्यमा, रुद्र, वरुण, सूर्य, भग, विवस्वान, पूषा, सविता, त्वष्टा और विष्णु। इस तरहसे विविध शब्दकोशोंमे आदित्योंके दिए नामोंमे विविधता है। जैसे की शुक्र, विष्णु, त्वष्टा, पर्ज्यन्य, रुद्र इन देवताओंकोभी आदित्य इस नामसे जाना गया है।

निरिक्षण

ऋग्वेदमें कई जगहपर सूर्यकी सात किरणें और सात आदित्य इनमें साम्य प्रतीत होता है। यहाँ छह आदित्योंके नाम स्पष्टरूपसे आये हैं। सात आदित्योंका उल्लेख 'सप्तादित्य' ऐसे समुहरूपसे और मार्ताण्ड के रूपमे आठवाँ सूर्य है। इस तरहसे ऋग्वेदमें और तैत्तिरीय आरण्यकमें आदित्योंकी गणना आठ की गई हैं। ऐतरेय ब्राह्मणमें आये बारा आदित्योंका समूहदर्शक नाम और शतपथब्राह्मणमें आये बारा महिनेके प्रतीक बारा आदित्योंकी गणना आगे स्थिर हुई दिखाई देती हैं। क्योंकी यहाँ आदित्योंकी तुलना संवत्सरमें आनेवाले महिनोंसे की गई है। इसिलिए आदित्योंके अलग अलग नाम होते हुये भी गणना बारा तक सीमित रह गई है।

निष्कर्ष

निश्चितरूपसे कौनसे बारा आदित्य ये ऐतरेयब्राह्मण या शतपथब्राह्मणमें उल्लेखित नही हैं। इसिलिए ऋग्वेदमें आये छह आदित्योंके सिवा बाकी आदित्योंमे मतभेद है। क्योंकी आदित्य ये नाम आदित्योंके लिए, देवताओंके लिए और एक विशेषण के रूप मेंभी आता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ग्रिफिथ राल्फ टी. एच., ऋग्वेद का इंग्लिश भाषांतर भाग 1 और 2, इ. जे. लेझरस और कं, बनारस।
2. पंडित जगदीशलाल शास्त्री, (1971), वाजसनेयिमाध्यन्दिन शुक्लयजुर्वेदसंहिता, मोतीलाल बनारसीदास, जवाहरनगर, दिल्ली।
3. लक्ष्मण सरुप, निघण्टुसमन्वितं निरुक्तम्, (1920), मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
4. विश्वबन्धु (संपा.) (1860-1864) अथर्ववेद (शौनकीय), विश्वेश्वरानन्द वेदिक शोध संस्थान, होशियारपूर।
5. वाचस्पत्यम्, चौखम्बा संस्कृत सीरिज, वाराणसी।
6. सायणभाष्यके साथ, (1830), ऐतरेयब्राह्मण भाग 1-2, आनन्दाश्रम, पुणे।
7. सोनटक्के और धर्माधिकारी (संपा.), (1936), ऋग्वेदसंहिता सायणभाष्यके साथ 1-10 मंडल, वैदिक संशोधन मंडल, पुणे।
8. सोनटक्के और धर्माधिकारी (संपा.), (1970), तैत्तरीयसंहिता, वैदिक संशोधन मंडल, पुणे।
9. सायणाचार्य विरचित सरस्वती श्री हरिस्वामी भाष्य, श्रीमद्वाजसनेयिमाध्यंदिन शतपथ- ब्राह्मणम्, (1939), गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास कल्याण, लक्ष्मीवेंकटेश प्रेस, मुंबई।

संकेत सूची = ऋग्वेद - ऋ; अथर्ववेद - अथ; वाजसनेयिसंहिता - वा. सं; ऐतरेयब्राह्मण - ऐ. ब्रा; शतपथब्राह्मण – श. ब्रा.; तैत्तिरीय आरण्यक - तै. आ.; निरुक्त - निरु.

[16] धाता मित्रोऽर्यमा रुद्रो वरुण सूर्य एव च। भगो विवस्वान् पूषा च सविता दशमस्मृत:। एकादशस्तथा त्वष्टा विष्णुर्द्वादश उच्चते॥ आप.कोश